Class- B.A-1(political science subsidiary)
Name of the guest teacher- Khushbu kumari
Department of political science,V.S.J.college,Rajnagar, madhubani (lnmu)

Scanned with CamScanner

Lecture-1

Topic- शक्ति(अर्थ,परिभाषा और शक्ति का बल,प्रभाव एवं सत्ता से संबंध)

शक्ति राजनीति विज्ञान का केन्द्रीय विषय है।प्राचीन काल से ही राजनीतिक विचारकों द्वारा इसका अध्ययन होता आ रहा है ।सभी विचारकों ने शक्ति के महत्व को स्वीकार किया है।वस्तुत: राजनीति विज्ञान के अध्ययन के अन्तर्गत यह आवश्यक हो जाता है कि हमारे द्वारा मानव के सार्वजनिक व्यवहार को निर्धारित करने वाले और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया जाए।इस संबंध में जो सबसे पहला तत्व सामने आता है वो निश्चित रूप से शक्ति ही है।

अर्थ एवं परिभाषा-

राजनीति विज्ञान में शक्ति के अर्थ को लेकर विभिन्न विद्वानों में मतभेद है ।अलग अलग विद्वानों ने अपने अपने तरीके से इसको परिभाषित करने का प्रयास किया है। इनमें से कुछ परिभाषाएं इस प्रकार है -

मेकाईवर के अनुसार - शक्ति होने से हमारा अर्थ व्यक्तियों या व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करने , विनियमित करने या, निर्देशित करने की क्षमता से है। मोर्गेंथाऊ के अनुसार - शक्ति का प्रयोग करने वालों तथा उनके बीच , जिन पर इसे लागू किया जा रहा है, एक मनोवैज्ञानिक संबंध होता है।शक्ति में वह प्रत्येक वस्तु सम्मिलित होता है , जिसके माध्यम से व्यक्तियों पर नियंत्रण स्थापित किया जाता तथा उसे बनाए रखा जाता है।

आर्गेंस्की के अनुसार - शक्ति दूसरे के आचरण को अपने लक्ष्यों के अनुसार प्रभावित करने की क्षमता है।

रॉबर्ट ए. डहल के अनुसार - शक्ति लोगों के पारस्परिक संबंधों की एक ऐसी विशेष स्थिति का नाम है,जिसके अन्तर्गत एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को प्रभावित कर उससे कुछ ऐसे कार्य कराए जा सकते है जो उसके द्वारा अन्यथा ना किए जाते।

Scanned with CamScanner

कुछ विद्वानों द्वारा जहां शक्ति को राजनीति में केन्द्रीय तत्व माना गया है वहीं कुछ विद्वानों ने शक्ति के नकारात्मक पक्ष को व दर्शाया है।जैसे लॉर्ड एकटन का एक प्रसिद्ध कथन है कि ' शक्ति भ्रष्ट करती है और निरंकुश शक्ति पूर्णतया भ्रष्ट कर देती है ' शक्ति के नकारात्मक रूप को दर्शाती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं का अगर हम विश्लेषण करते हैं तो देखते है कि शक्ति का जुड़ाव प्रभाव के साथ है।शक्ति को प्रभाव का पर्यायवाची मान लिया गया है।कुछ परिस्थितियों में यह सत्य होता है, लेकिन सभी परिस्थितियों में नहीं।शक्ति एवं प्रभाव के बीच संबंध को हम इस प्रकार समझ सकते है -
समानताएं - शक्ति एवं प्रभाव दोनों ही बौद्धिक एवं संबंधत्माक हैं तथा एक दूसरे को सबलता प्रदान करते है। दोनों औचियपुर्ण हो जाने के बाद ही प्रभावशाली होते हैं। प्रभाव शक्ति उत्पन्न करता है और शक्ति प्रभाव को।दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता पड़ती है।
असमानताएं - शक्ति दमनात्मक होती है और उसके पीछे कठोर भौतिक बल एवम् प्रतिबंधों का योग होता है।जब शक्ति का प्रयोग किया जाता है तो शक्ति से प्रभावित होने वाले व्यक्ति या समूह के पास उसे स्वीकार करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता।प्रभाव अनुनयात्मक , स्वेच्छापूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक होता है। प्रभावित होने वाले व्यक्ति उस समूह के पास उसके अनुपालन के विषय में अनेक विकल्प रहते हैं।इसी प्रकार शक्ति प्राय: शक्तिधारक के पास एक स्वतंत्र तत्व के रूप में रहती है।उसका प्रयोग शक्तिधारक दूसरों की इच्छा के विरुद्ध के कर सकता है।प्रभाव संबंधात्मक होता है उसकी सफलता का आधार प्रभावित व्यक्ति की सहमति या स्वीकृति होती है।

कई बार शक्ति और बल को एक ही समझ लिया जाता है। परन्तु दोनों में बहुत अंतर होता है।शक्ति की पृष्टभूमि में बल रह सकता है, किन्तु वह बिल्कुल अलग है।शक्ति अप्रकट तत्व है, बल प्रकट तत्व है।

Scanned with CamScanner

रॉबर्ट बायरस्टीड ने शक्ति के तीन रूप बताए हैं- बल,प्रभाव तथा प्रभुत्व।जब बल अमर्यादित तथा लक्ष्यहीन होता है तब उसे दमन कहा जाता है। स्वीकृत, सीमित तथा नियंत्रित बल को शास्तियां कहा जाता है, इस प्रकार शक्ति बल की तुलना में एक व्यापक तत्व है।

राजनीति विज्ञान में अगर हम शक्ति की बात करे तो शक्ति के संबंध में तीन बातें कह सकते है -

१. राजनीतिक शक्ति धारण करने वालों में उच्च अधीनस्थ सम्बन्ध प्रकार होना स्वाभाविक है।

२. राजनीतिक शक्ति का प्रयोग अंततः सामान्य जनता पर होता है और उसे सत्ता का प्रयोग करने वालों की बात माननी पड़ती है।

३. राजनीतिक शक्ति मनोवैज्ञानिक संबंध प्रकट करती है, न कि भौतिक संबंध।

शक्ति और सत्ता

राजनीतिक संगठन उं संरचनाओं द्वारा निर्मित होते हैं जो कि बल के प्रयोग का नियमन करती है तथा सामाजिक सहयोग और नेतृत्व से संबंधित होती है।इसमें शक्ति और सत्ता का महत्वपूर्ण स्थान होता है।शक्ति को अपनी इच्छा को प्रभावशाली ढंग से पूर्ण करने की योग्यता के रूप में देखा जा सकता है और यदि आवश्यकता पड़े तो दूसरे पर थोपा जा सकता है।जबकि सत्ता को हमेशा जनस्वीकृति हासिल होती है।बिना जनस्वीकृति के शक्ति हासिल करने और उसके प्रयोग को सही रूप में सत्ता नहीं कहा जा सकता।

Scanned with CamScanner

वस्तुत: शक्ति को जब औचित्यतता प्राप्त हो जाती है तब उसे सत्ता कहते है और ये औचित्यता जनता के द्वारा संवैधानिक अधिकारों के प्रयोग द्वारा सत्ताधारी को प्रदान की जाती है।

- - - - - - - -

Scanned with CamScanner